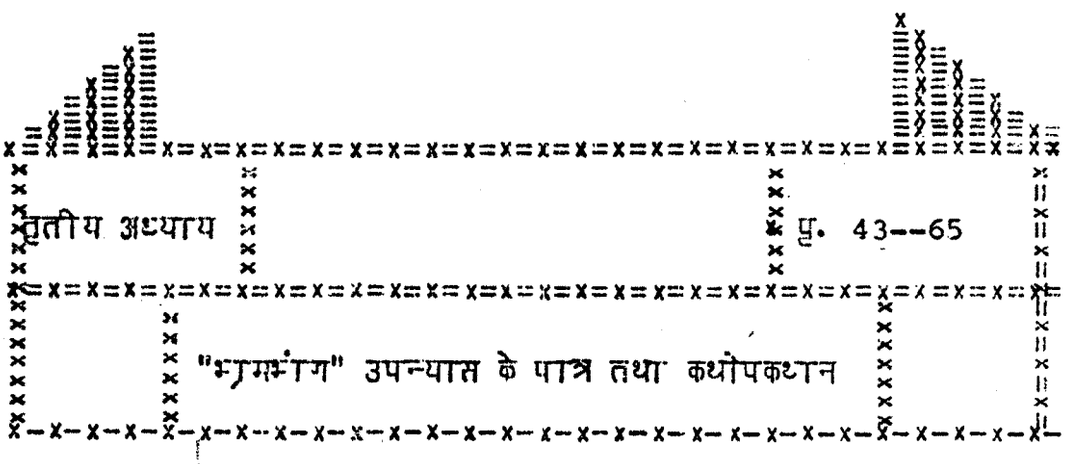
तृतीय अध्याय
पृ. 43--65
"भ्रमभंग" उपन्यास के पात्र तथा कथोपकथन

तृतीय अध्याय

"भ्रमभंग" उपन्यास के पात्र तथा कथोपकथन

१] स्वरूप

उपन्यास युग तथा समाज के संदर्भ में बदलते मानवजीवन का यथार्थ चित्र प्रस्तुत करता है। वास्तव में उपन्यास का मुख्य विषय मानव और उसका चरित्र ही है। इस दृष्टि से पात्र और उनका चरित्र चित्राण उपन्यास का सबसे महत्त्वपूर्ण तत्त्व है। उपन्यास के पात्र किसी वर्ग के प्रतिनिधि होते हैं। और वे अपने वर्ग का दृष्टिकोण और विचारधारा को प्रस्तुत करते हैं। किसी भी उपन्यासकार का मूल्यांकन उनके पात्रों के चित्राणों व्दारा ही सम्भव है। चरित्रों के महत्व की दृष्टि से डॉ. बेचन की धारणा है, -"एकमात्र चरित्र या पात्र ही कथा का मेरुदण्ड है। पात्र और चरित्र के इर्द-गिर्द फैला हुआ वातावरण, परिस्थितियाँ और आवेष्टन ही लेखाक या कलाकार के लिए कच्चा माल है जिसे पक्का [मेगनिफाइड] बनाकर वह नाटक, कहानी, आख्यायिका, गद्य, उपन्यास, जीवनवृत्त, आत्मचरित्र, भ्रमण-वृत्तान्त, और महाकाव्य आदि का कलेवर तैयार करता और उसे सजाता है। कथा का प्रधान लक्ष्य चरित्रचित्राण व्दारा मानव संवेदना को जागृत करना है। इस संवेदना को प्रभावोत्पादक बनाने के लिए ही वह घटनाओं का सृजन करता है और संगीत की रीति की तरह आरोह - अवरोअ की गति संचालित करता है, क्लाइमेक्स पर पहुँचता और उतरता है।"[१]

उपन्यास सम्राट "मुन्शी प्रेमचंदजी" ने उपन्यास में चरित्र चित्राण का महत्व बताते हुए लिखा है, "उपन्यास के चरित्रों का चित्राण जितना ही स्पष्ट गहरा और विकासपूर्ण होगा, पाठकों पर उसका उतना ही गहरा असर पडेगा।"[२] चरित्र तो पात्र के गुण-दोषों का लेखाजोखा होते हैं। पात्रों के गुण और दोषों का विवेचन देश-काल, समाज और परिस्थिति के दायरे

में रहकर ही किया जा सकता है। पात्रों के मन में उत्थान-पतन का नाम ही अर्न्तव्दन्व्द है। जिस उपन्यास में अर्न्तवर्द्दन्व्द का चित्राण सुंदरता से होता है, उतना ही वह सफल होता है।

२] उपन्यास में चरित्र चित्राण का महत्व

डॉ. त्रिभुवनसिंह के मतानुसार, "उपन्यासकार के लिए किसी भी चरित्र का निर्माण करना तब तक संभव नहीं है, जबतक कि वह अपनी कल्पना के सम्मुख किसी जीवित व्यक्ति को लाकर खाडा नहीं कर लेता। बिना किसी एक निश्चित व्यक्ति को मस्तिष्क में लाये यह कभी भी सम्भाव नहीं है कि, चरित्रों में जीवन-प्रेरणादायिनी शक्ति का संचार किया जा सके। वह निश्चित व्यक्ति लेखाक के आसपास का भी हो सकता है और लेखाक स्वयं भी।"[३]

डॉ. रांगाजी के मतानुसार, "जिनका परिचय क्षेत्र सीमित होता है, जो अनेकबार संपर्क में आने पर भी दूसरों से घुल-मिल नहीं पाते। जिन्हें मित्र बनने और बनाने में देर लगती है, उनके मित्रों की संख्या कम होती है पर वे जितने भी हों, होंगे घनिष्ठ ही।"[४]

देवेशाजी का उपन्यास "भ्रमभंग" का प्रमुख पात्र "चन्दन" इसी कोटि का है। उपन्यासकार जिन चरित्रों का निर्माण करता है, उसके पीछे एक विशिचत आधार अथवा गुणों का प्राधान्य रहता है। उपन्यासकार देवेशाजी के "भ्रमभंग" उपन्यास के पात्र भी मध्यवर्गीय बुध्दिजीवी रहे हैं।

३. उपन्यास का नायक

क] वास्तव पात्र

"भ्रमभंग" उपन्यास का प्रमुख पात्र नायक चन्दन बम्बई के कॉलेज में प्राध्यापक है। उपन्यासकार डॉ. देवेशाजी भी प्राध्यापक हैं। शिक्षा-क्षेत्र को उन्होंने नजदीक से देखा है, परखा है और भोगा है। कॉलेज के

अध्यापकों की जिन्दगी, कॉलेज में सेठ साहुकारों तथा पुंजिपतियों के बेटों के मनचले, संस्कारहीन बच्चों से भारी डेढ सौ की कक्षाओं का नियंत्राण करना, महानगरीय प्राध्यापक के लिए मुश्किल कार्य होता है। कॉलेज, विश्वविद्यालय में चलनेवाली भ्रष्ट राजनीति, कॅम्पस के बाहर अध्यापकों की किसी होटल के कमरे की एक जिन्दगी, लोकल ट्रेन, बस की भीड में धाक्कमबुक्की करके हर दिन कॉलेज आना जाना। इन सब बातों को उन्होंने स्वयं भुगता है। अत: चन्दन का चरित्र-चित्राण लेखाक के वास्तव जीवन की अनुभूतियों संपन्न है।

ख] <u>युवापीढी का प्रतीक</u>

"भ्रमभंग" उपन्यास का केन्द्रिय पात्र "चन्दन" उपन्यास का नायक है। वह युवापीढी का प्रतीक है। उपन्यास के नारी पात्रों में चन्दन की पत्नी शुभी एवं राजकोट की प्रोफ्सर मिस्. सुमन शाह के व्यक्तित्व उल्लेखानीय है। देवेशाजी ने चन्दन के मित्रों, भारत लॉज के निवासियों, हिन्दी विभागाध्यक्षों, चन्दन के माता-पिता, दो भाईयों [कुन्दन और नन्दू] तथा बहन चम्पा के व्यक्तित्व को भी गौण रूप में चित्रित किया है।

उपन्यास आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुत होने के कारण अन्य पात्रों के व्यक्तित्व की संपूर्ण विशेषाताओं के लिए अवसर प्राप्त नहीं होता। अत: उपन्यास का प्रमुख पात्र तथा नायक एकमात्र चन्दन ही है। देवेशाजी को भी यही अभीष्ट है। उपन्यास चरित्र प्रधान है। २०४ पृष्ठों के उपन्यास में सभी चरित्रों के साथ न्याय कर पाना भी सम्भाव नहीं है और लेखाक का यह उद्देश्य भी नहीं है।

"भ्रमभंग" का उद्देश्य है, निम्नमध्यवर्गीय उच्चशिक्षित नवयुवक की महत्वाकांक्षाओं एवं उसकी विवशाताओं के बीच के घानघोर संघार्ष का चित्राण करना। उपन्यास का नायक चन्दन स्वतंत्र भारत की विकासोन्मुख युवापीढी का प्रतीक बन गया है। चन्दन में देवोपम गुणों एवं सर्वज्ञता की प्रतिष्ठा न करके लेखाक ने नायक के परम्परागत बिम्ब को तोडा है।"[५]

ग]"लघुमानव" युवक

"डॉ. रमेश कुन्तल मेघ" ने "एक अनायक चरित्र की गाथा : भ्रमभंग" नामक शीर्षक से एक टिप्पणी लिखाते हुए एक सामान्य नवयुवक को भ्रमभंग का नायक बनाने के लिए देवेशजी की प्रशंसा की है कि, "एक नया प्रस्थान यह है कि इसमें एक निम्नमध्यवर्गीय युवक प्रो. चन्दन को लिया गया है। जो रोमान्टिक नायक नहीं है, अज्ञेय की शेखर जैसा, जो कलाकार नहीं है अश्क के चेतन जैसा, और जो विद्रोही नहीं है यशपाल के जयपुरी जैसा। एक "लघुमानव" के रूप में बेकार युवक चन्दन और बाद में प्रोफेसर चन्दन की परिस्थितियों और संस्कारों, परिवार और जीविका, मित्रों और छात्र-छात्राओं, शहरों और कस्बों के उन सैकडों भ्रमों [रूढियों, संस्कारों, ईमानदारियों, भावुकताओं आदि] की बिन्दु-बिन्दु बातें अंकित हैं। माँ भ्रम, संयुक्त परिवार के पोषाण का भ्रम, प्रेम का भ्रम खंडित करता हुआ अर्थात् "भ्रमभंग" करता हुआ अर्थात् व्दिधाओं और चिंताओं को समाप्त करता हुआ ... "साफ और धुली हुयी" मामुली जिन्दगी की शुरूआत करता है।"[6] अर्थात परिवार को लेकर विवाह को लेकर प्राध्यापकीय व्यवसाय को लेकर जो भ्रम - सपने - आदर्श चन्दन ने सामने रखे थे वे सब भंग हुअे और यथार्थ सत्य का बोध उसे होता है।

"" भ्रमभंग" में एक मामुली अध्यापक की व्यक्तिगाथा के खाण्ड-पाखाण्ड आत्मोद्घाटित हुए हैं।"[7] वस्तुत: "भ्रमभंग" एक अनायक चरित्र को तथा शिक्षाक्षेत्र के अनुभाव-संसार को उद्घाटित करता है।

घ] संघार्षशील युवक

"चन्दन" में संघार्ष करने की अदभुत क्षामता है। भयानक दारिद्रय में भी वह महत्वाकांक्षी है। इसमें अदम्य जीजीविषा है। चन्दन का चरित्र जीवन संघार्ष की कहानी है।

छात्रावस्था में मूँगफली के छिलके खाकर चन्दन ने दिन गुजारे हैं।

सिटी कॉलेज बम्बई में "इण्टरव्यू" लेनेवाले बोर्ड के सदस्य चन्दन की प्रतिभा से प्रभावित होकर ही उसकी नियुक्ति करते हैं |

कॉलेज में शरारती विद्यार्थियों से हार न मानकर चन्दन उनको वश में कर लेता है |

मेधा की ओर से नकारात्मक उत्तर पाकर भी वह निराश नहीं होता |

संयुक्त परिवार के बोझ को ढोने के लिए प्राध्यापक की नौकरी के अलावा अन्य दूसरे काम भी करता रहता है |

चन्दन में हर परिस्थिति का मुकाबला करने और प्रबल इच्छा शक्ति के बलपर विरोधी स्थितियों को भी अनुकूल बनाने की अद्भुत क्षमता है |

चन्दन के चरित्र को पढते हुए हजारी प्रसाद द्विवेदी द्वारा उध्दृत यह श्लोक मन्तव्य है - "अर्जुनस्य प्रतिज्ञे द्वे, न दैन्यम् न पलायनम् |"

कथाकार "से. रा. यात्री" ने ठीक ही लिखा है कि, "चन्दन नेगी के रूप में लेखक ने वास्तव में एक इस्पाती चरित्र की रचना की है जो सब ओर से टूट-बिखर कर भी सधो पात्रों से चलते रहने का निर्णय और विश्वास अपने हाथों से छुटने नहीं देता |"[८]

चन्दन की अदम्य इच्छा शक्ति एवं संघार्ष को अपने परिवेश से टक्कर लेनी पडती है | "कितने सारे निष्ठोध | .... आधी जिन्दगी अभावों, अपेक्षाओं और अपमानों के बीच बीती | आगे की आधी निष्ठोधों के बीच बीतेगी | ... तुम क्या इसीलिए जनमे थे कि अभिशाप्त होकर जियो | .... ?"[९]

संघार्ष के टकराव, व्यथा, विचार और निराशा चन्दन के मनोबलों को तोड नहीं पाती है | चन्दन का दूसरा मन उसे उत्साहित करता रहता है | मार्गदर्शन करता रहता है | - "सुख के सपने देखना, दुख को बुलावा देना है | कोई बात नहीं चन्दन ....| मन छोटा नहीं करते | एक और अनुभव |"

देवेशाजी ने "भ्रमभंग" में निम्नमध्यवर्ग समाज के बहुविध समस्याओं को गम्भीर दायित्व के तहत प्रस्तुत किया है। व्यक्ति, परिवार और समाज के बीच सौमनस्य का रिश्ता टूट जानेपर सबसे बडा संकट इकाई के रूप में व्यक्ति को ही झेलना पडता है। व्यक्ति से, परिवार और उससे आगे जाकर समाज को, केवल अपेक्षायें ही होती हैं। किन्तु इकाई के रूप में व्यक्ति को यदि जीने का न्यूनतम आधार भी उपलब्ध न हों तो निरन्तर संघर्षो से जूझने बाद भी वह जीवन की व्यर्थता का अनुभव करता है।

ड.] <u>सक्रिय तथा कर्मठ युवक</u>

उपन्यास का नायक "चन्दन" उच्चशिक्षित और सक्रिय युवक है। उसमें संघर्ष करने की अटूट सामर्थ्य हैं। किन्तु उसके मनोजगत् के बाहर का समस्त परिवेश घिनौना भयावह और घटिया है। सबतरफ छद्म और शोषण का जानलेवा पहिया घूम रहा है। चन्दन देहरादून से जब पहली बार नौकरी के लिए बम्बई आता है तो वह एकाकीपन और अपमान का अनुभव करता है। चन्दन समयसाधक बनने में असमर्थ है। इसलिए न उसे अपनी इच्छित प्रेमिका पत्नी रूप में मिलती है, न सांसारिक भोग और न ऐश्वर्य।

नौकरियों में चन्दन को सिर्फ भटकन ही नसीब रही है। वह बम्बई से राजकोट जाता है। वहाँ भी उसे स्थिरता नहीं मिलती। सुमन के रूप में जो प्रेमिका मिलती है वह भी उसकी शिराओं में उत्तेजना और कुण्ठाओं का जहर मात्र प्रवाहित करती है।

भाई, बहन और माता-पिता का संस्कारजन्य बोध उसकी पीठ दुहरी कर देता है। "चन्दन के लिए सारे जागतिक संबंध क्रूर रूप से महज आर्थिक होकर रह जाते हैं। वह जिधर भी दृष्टि डालता है उसे प्रवंचना के अलावा और कुछ नहीं मिलता।"[१०]

च] <u>विद्रोही युवक</u>

एक मध्यवर्गीय और जिम्मेदार युवक की भाँति चन्दन भी एक

आदर्शवादी युवक है | अविवाहित रहकर नौकरी मिलते ही चन्दन अपनी परिवार की जिम्मेदारी सँभालता है | विवाह करते समय भी वह अपनें परिवार के हित की दृष्टि से नोकरी पेशा युवती के साथ विवाह करता है | परिवार की आर्थिक स्थिति न बिगडे इसलिए वह तीसरे बच्चे के समय क्यूरेटिंग का कठोर निर्णय करता है | इतना करने पर भी जब उसे भाई-बहन और माँ-बाप से केवल उपेक्षा, अविश्वास और अपमान ही प्राप्त हुआ तब वह रिश्ते-नातों के संबंधों में सन्देह व्यक्त करता है और वह जिस नतीजे पर पहुँचता है वह उसीके शब्दों में कितना भयावह, तीखा तथा मार्मिक है,- "माँ और बहिन के रिश्ते | कैसे रिश्ते? कैसा खून? कैसा प्यार ... ? ये तो गैंग्रीन हैं | जिन्दा रहना है तो अपने शरीर से इन्हें काटकर फेंक देना होगा |"[११] और इस निर्णय पर पहुँचकर चन्दन अपनी मध्यवर्गीय संस्कारों से मुक्ति पाता है और समस्त मृतवत् संबंधों के आदर्शों के भ्रम को वह तोड देता है |

जीवन की सच्चाई की स्वीकृती के लिए चन्दन का विद्रोही मन इस भ्रमभंग को आवश्यक मानता है | वह कहता है, "अपनेपन का भ्रम | अपने खून का भ्रम | नाते-रिश्तों का भ्रम | .... सब भ्रम टूटते ही हैं | उन्हें टूटना होता है | इसलिए टूटना होता है कि वास्तविकता रहे, सच्चाई जीवन्त हो |"[१२]

अर्थकेंद्रित रिश्तों की घिनौनी और कडुवाहट भरी पहचान होते ही जब कोई मध्यवर्गीय संवेदनशील युवक परिवार और समाज के झूठे संबंध और मृत आदर्शों के विरुध्द विद्रोह करता है तो वह बन जाता है "भ्रमभंग" का चन्दन | यह युवक देश के किसी भी हिस्से में हो सकता है | कोई छोटा-मोटा अफसर या कोई क्लर्क भी हो सकता है | अथवा किसी कॉलेज का प्राध्यापक भी |

छ] प्रगतिशील युवक

चन्दन के चरित्र-चित्रण का मूल उद्देश्य अर्थहीन रिश्तों की विरसता का उद्घाटन और रिश्तों से मुक्ति के लिए सार्थक विद्रोही दृष्टि

की स्वीकृति है | परिणामस्वरूप व्यक्ति कम से कम अपने अस्तित्व की रक्षा कर सके | आज इस देश में मध्यवर्गीय युवक जीवन की असंगतियों में पिसते जा रहे हैं | और इनसे वे मुक्ति तो सभी चाहते हैं | लेकिन अपनी दुर्बलताओं के कारण आजीवन उनसे बाहर नहीं निकल पाते | चन्दन का चरित्र ऐसे ही विवश, मजबूर युवकों को राह दिखाता है | और इस के साथ ही मध्यवर्गीय की मौजूदा व्यवस्था के बदलाव के लिए यह आवश्यक है कि, "प्रगतिशील राजनैतिक शक्तियों के साथ - लेखक, पत्रकार और अध्यापक भी एक हाथ में ईट और दूसरे हाथ में कलम लेकर पुंजीवादी व्यवस्था से संघर्ष करने के लिए उद्युक्त हो जाये |"[१३]

"चन्दन व्दारा अपने मित्र नरेश को लिखे गए पत्र में व्यक्त उसका यह दृष्टिकोण उसके संघर्ष को व्यापक धरातल पर प्रतिष्ठित करा देता है |"[१४] इसप्रकार चन्दन अपने प्रगतिशील दृष्टिकोण से प्रतिक्रियावादी शक्तियों के विरूध्द प्रगतिशील शक्तियों का नेतृत्व करता है |

चन्दन का चरित्र निर्मल और छल-कपट से रहित है | इसीकारण परिवार, बाहर, साहित्य, राजनीति और शिक्षा-क्षेत्र में भ्रष्टाचार को देख कर वह आक्रोश करता है | नेहरु और जयप्रकाश के आदर्शों के विरूध्द आचरण को देखकर वह उसका मन घायल हो जाता है | "भ्रमभंग" उपन्यास में सर्वत्र यही असंतोष और विद्रोह तथा आक्रोश व्याप्त है |

ज] प्रतिबध्द चेतना का युवक

चन्दन बुध्दिजीवी, और विचारशील है | उसकी चेतना सामाजिक है | तथा उसके प्रति स्वयं को वह प्रतिबध्द मानता है | अपने पत्रों में चन्दन ने अपने जीवनदर्शन को स्पष्ट किया है | "लेकिन मेरा मन कहता है नरेश, हमारे देश में एक नयी पीढी जन्म ले चुकी है जो इस व्यवस्था को बदलेगी | हमारी मान्याताएँ परिवर्तित होंगी |"[१५]

चन्दन में दूसरों के व्यक्तित्व विश्लेषण की अद्भूत क्षमता है | हिन्दु कॉलेज के अपने विभागीय अध्यक्ष के व्यक्तित्व का चित्राण इसप्रकार किया है, "वाणी में बनारस के ब्राम्हणों जैसी गरिमा | चश्मे से ढकी हुई आँखों से हमेशा कुछ खोजते हुए | रहस्या लोक-सा बनाते हुए | मुझे इनका खुलकर हँसना बहुत भाता है | .... मन से बुरे नहीं हैं | लेकिन अपने को बडा बनाने के प्रयास में उनका सब कुछ छोटा हो जाता है |"[१६]

चन्दन इतना सीधा साधा और सरल भी नहीं है कि कोई उसे सहज ही धोका दे सके | राजकोट के अपरिचित माहौल में वह सुमन शाह की ओर आकर्षित होता है | क्योंकि मेघा के ब्याह की खाबर उसे प्राप्त होती है | अत: हम यह नहीं कह सकते कि सुमन शाह ने चन्दन को अपने जाल में फँसाकर उसका उपयोग कर लिया |

झ] संस्कारसंपन्न युवक

निम्नमध्यवर्गीय संस्कार संपन्न चन्दन को कठोर होकर खून की रिश्तों से स्वयं को अलग कर देना संभव नहीं है | क्योंकि उसका आदर्श है - "उठना है तो पूरे परिवार को साथ लेकर उठना है | अपनी सुविधाओं के बारे में तो सब सोच लेते हैं ....| फिर मैं क्यों सोचूँ कि मेरे माता-पिता, भाई-बहिन दूसरे हैं | वे तो बिलकुल मेरे अपने हैं | उनके लिए कुछ करता हूँ तो अपनी सार्थकता अनुभाव होती है ....|"[१७]

अपने परिवार का बोझ उठाते उठाते चन्दन दिल के दौरे का शिकार हो जाता है | फिर भी उसके आदर्शवाद, परिवार के प्रति ममता का भाव, त्याग और कपट सहिष्णुता को उसके माता, पिता, भाई, बहन समझ ही नहीं पाते | बल्कि उसके प्रति अविश्वास तथा परायेपन का भाव व्यक्त करते हैं |

त्र] ईमानदार युवक

पिता की मृत्यु के बाद माँ, बेटी और भाई मनमानी ढंग से

बर्ताव करते हैं। और चन्दन के प्रति नफरत और दुराव का परिचय देते हैं। संस्कारक्षम और संवेदनशील चन्दन, बुध्दिजीवी और विचारशील चन्दन, एक आदर्शवादी युवक चन्दन, एक झटके के साथ खून के रिश्तों से स्वयं को तोड देता है और नयी जिन्दगी की शुरुआत के लिए वह निर्णय लेता है कि, भ्रमों से मुक्त जिन्दगी ही ठीक है। उसका दूसरा मन उससे कहता है, - "तुम मत सोचो चन्दन। तुम्हें बस इतना सोचना है कि तुम ऐसे पिता न बनों। शुभी ऐसी माँ न बने ....।"[१८]

डॉ. हनुमन्त नायडु के अनुसार, "चन्दन की यह "बोल्डनेस" संभावत: इस समाज के अनेक लोगों को खटकेगी जिस समाज में बेटे का आदर्श श्रवणकुमार को माना जाता है तथा जिस समाज में माँ-बाप अपनी पूरी जिन्दगी भोग चुकने के बाद भी जवान बेटे के कन्धों पर चढकर अपनी अधूरी साधों को पूरा करने की इच्छा रखाते हैं। जिस समाज में हमेशा बडा बेटा कर्तव्य के नाम पर बाप के अधूरे कामों को पूरा करने के लिए विवश तथा एक पीढी पीछे की जिन्दगी जीने के लिए अभिशप्त है, उस समाज के बहुत से ठेकेदार चन्दन के निर्णय से चौकेंगे।"[१९] लेकिन जब व्यक्ति के सामने जिन्दगी और मौत के दो ही रास्ते खुले हो तब गलत स्थानपर कुर्बानी की अपेक्षा जीवन का चुनाव आवश्यक ही नहीं अनिवार्य भी है।

तात्पर्य चन्दन एक संघार्षमय जिन्दगी के बीच एक साबूत व्यक्तित्व लेकर चलनेवाला ईमानदार युवक है। चन्दन जीवन में ममता की एक एक बुँद के लिए तरसता रहता है। जीवन में उसे चारों ओर ममता की ही तलाश है, यह ममता चाहे उसे मेघा से मिले, सुमन शाह से मिले अथवा शुभी से मिले।

निष्कर्षत: चन्दन की पूरी जीवनयात्रा में इसी ममता की तलाश है। "पारिवारिक सम्बन्धों के प्रति लगाव से लेकर घृणा और विद्रोह तक की यात्रा करनेवाले चन्दन का सशक्त एवं जीवन्त चरित्र निश्चयही अपनी विशेषाताओं के कारण हिन्दी उपन्यास साहित्य में अव्दितीय है।"[२०]

४] सुमन शाह

क] कोमल व्यक्तित्व

नारी प्रेम की गरिमा का एहसास करानेवाली केवल सुमन ही है। सुमन का चरित्र इस उपन्यास की उपलब्धि मानी जा सकती है। सुमन नारी प्रेम के परम रूप को दर्शाती है। जिसमें सिर्फ समर्पण है, निश्चल स्नेह है, तथा ममत्व है। सौराष्ट्र कॉलेज में दर्शनशास्त्र विभाग की अध्यक्षा कु. शाह एन. सी. सी. ऑफिसर होने के कारण कॅप्टन शाह के रूप में सुपरिचित है। वह सुन्दर है और "वेल बिल्ट" भी है। चलते समय वह सीधे तनकर चलती है। होठोंपर गुलाबी लिपस्टिक लगाती है। आँखें काले और भुरे के बीच के रंगवाली। पहले वह विल्सन कॉलेज में दर्शनशास्त्र की प्राध्यापिका रह चुकी है। मिस् शाह की कोमलता के संपर्क से चन्दन का कोमल मन प्रसन्न हो जाता है। चन्दन मिस शाह के व्यक्तित्व से अत्यंत प्रभावित होता है।

चन्दन की मुलाकात प्रो. सुमन शाह से राजकोट कॉलेज में पहली बार होती है। देवेशजी ने सुमन शाह के चरित्र को बहुत गहरे रंगों में चित्रित किया है। "सुमन झुकी हुई डाली पर एक पूरा खिला हुआ फूल है, ... सुन्दन भी, आकर्षक भी।"[२१] गुलाबी सुन्दरता से भरी, "अवस्था और अनुभाव" में चन्दन से बडी, "विश्वासमयी" सुमन से चन्दन को "मोह" हो जाता है। सुमन के मन में भी चन्दन के प्रति आकर्षण है। भौतिक स्तर पर हर सुविधा से संपन्न होते हुए भी सुमन मन से कितनी अकेली है, यह चन्दन को उसके समीप जाकर ही ज्ञात होता है। उसका अकेलापन, उसकी निरीहता, उसकी विवशता, करुणा उत्पन्न करती है। वह किसी की "प्रॉपर्टी" बन नहीं सकती और किसी को अपनी "प्रापर्टी" बना भी नहीं पाती।

सुमन आकर्षण की फिसलन पर खडी होकर भी वह खुद नहीं फिसलती और चन्दन से अपने निजी सम्बन्धों के बारे में स्पष्ट और खुली चर्चा करती है। एक प्रेयसी के आवेशमय स्वच्छन्द प्रणय के स्थान पर सुमन में

ममतामय गम्भीर स्नेह ही अधिक मुखर है और यही स्नेह बरबस चन्दन को अपनी ओर खींचता है | सुमन चन्दन के सन्तान सम्बन्धी रंगीन सपनों की उँचाइयों तक स्वयं को उठाने में असमर्थ पाती है | परिणामस्वरूप वह चन्दन के जीवन से अलग हट जाती है | परन्तु जाने-जाते भी वह उपन्यास में एक करुण गंध छोड जाती है | चन्दन भी उसे कभी नहीं भूल पाता |

ख] आधुनिक नारी

सुमन दर्शन की प्राध्यापिका है | उम्र में वह चन्दन से बडी है और पूरे अर्थ में स्वच्छंद जीवन व्यतीत करनेवाली एक आधुनिका है | अनेक पुरुषों से शारिरीक स्तर पर वह जुडी हुयी है | परिस्थितियों और परिवेश की जरुरत ने उसे ऐसी जिन्दगी जीने के लिए मजबूर किया है | उसके भीतर एक निपट स्त्री बसी हुयी है | जो एक पुरुष से नि:स्वार्थ प्रेम की अपेक्षा रखाती है | चन्दन का परिचय जब सुमन के भीतर की स्त्री से होता है तो वह उसे पत्नी के रूप में स्वीकारने के लिए तैयार हो जाता है | सुमन में वह एक सम्पूर्ण स्त्री को देखाता है | सुमन व्दारा यह पूछे जानेपर कि विवाहोपरान्त वह उससे क्या अपेक्षा करता है, चन्दन उत्तर में एक बच्चे को चाहने की बात कहता है | इसपर सुमन तडपकर उससे अपने पास ले चले जाने को कह देती है | भौंचक चन्दन कुछ समझ नहीं पाता | यह चन्दन के प्रति सुमन का प्यार ही है कि वह उससे जुडकर उसके पिता बनने की सम्भावना को नष्ट नहीं करना चाहती | शायद इसके पीछे सुमन में माँ बनने की अक्षामता ही कारण हों | "सुमन "भ्रमभंग" की अत्यन्त आकर्षक तथा प्रभावशाली पात्र है | अपने त्याग और समर्पण में सुमन अमर कथाकार शरत्चन्द्र की नारी का आधुनिक संस्करण लगती है |"[२२]

कॉलेज के स्टाफरूम में सुमन चन्दन से कहती है, "...आई हेट स्मोकिंग |"[२३] लेकिन जब उसके बेडरूम में चन्दन को सिगरेट के खाली पॅकेट और जयपुरी ऐश ट्रे मिलते है, तब चन्दन उसे पूछता है कि, ये किसके लिए है? सुमन शांत उत्तर देती है, "ये सब मेरे बेडरूम फ्रेंड के लिए है |"

ग] <u>प्रेम विषयक दृष्टिकोण</u>

सुमन शाह अपने शारिरीक संबधों की व्याख्या करते हुए कहती है,- "बढ़िया शरीर, मुझ-जैसा, तो चारों ओर भेडिये घिर आते हैं .... वकील, डॉक्टर, बिजनेसमैन और उनके छोकरे। मिलिट्री अफ्सर, प्रोफेसर ... सभी कहीं न कहीं भेडिये होते हैं। औरत उनके लिए एक मेमना है।"[२४]

सुमन शाह चन्दन से अपने मन में ब्याह के बारे में सोचती रहती है। इसलिए वह चन्दन से अपने प्रति आत्मीयता की भावना पाने के लिए नाटकीय आँसू बहाकर कहती है, "मैं आज भी अकेली हूँ प्रोफेसर .... बिल्कुल अकेली। वह मेरा नहीं है। कोई भी मेरा नहीं।"[२५] और यह बताती है कि एक विवाहित बैंक मैनेजर से उसका शारिरीक संबंध है, वह चन्दन से ईर्ष्या करता है और उसे अपने रास्ते से हटाना चाहता है। लेकिन सुमन शाह को मैनेजर की अपेक्षा चन्दन प्रेमी के रूप में अधिक पसंद है।

मेघा के प्रेमभंग से घायल चन्दन सुमन शाह को सम्पूर्णत: अपनी पत्नी के रूप में स्वीकार करने के लिए तैयार हो जाता है। दोनों विवाह के मधुर सपने देखने लगते हैं। जब सुमन यह जानती है कि चन्दन उससे एक सुन्दर-सा बच्चा चाहता है तो वह रोने लगती है और चन्दन को अपने बंगले से निकाल देती है। सुमन ने ऐसा विचित्र व्यवहार चन्दन से क्यों किया? उसका यह रह चरित्र रहस्यमय और गूढही रहा है। क्या वह प्रजनन में असमर्थ थी? क्या वह पत्नीत्व और मातृत्व का भार वहन नहीं करना चाहती थी? इन प्रश्नों के उत्तर उपन्यास में कहीं भी नहीं है। लेकिन सुमन चन्दन को राजकोट छोड देने को के लिए परामर्श देती है। वह कहती है, - "तुम घर-परिवार और पत्नी-बच्चों के बारें में जो कुछ सोचते हो, मैं उसमें फिट नहीं बैठती।"[२६] बच्चे की बात को लेकर मिस सुमन इतना डिस्टर्ब क्यों होती है? सुमन शाह कहती है, -"कुछ बाते इतनी पर्सनल होती हैं चन्दन .... इतनी कि अपने से भी कहते डर लगे। आय रिक्वेस्ट यू। डोण्ट प्रेस मी फॉर दैट ....।"[२७] सुमन के इन कथनों से लगता है कि, उसका अतीत भयानक प्रसंगों से भरा हुआ होगा। लेखक ने उसके अतीतपर पर्दा डालकर सुमन के चरित्र को एक गूढ चरित्र बना दिया है।

घ] गूढ चरित्र

पाठक अपनी अपनी योग्यता और रुचि के अनुसार सुमन के चरित्र विषायक कुछ निष्कर्ष निकालते हैं कि, सुमन शाह शायद सन्तान उत्पत्ति के लिए अयोग्य है | कोई पाठक सोचेंगे कि सुमन शाह मुक्त यौन-सम्बन्ध के लिए चन्दन से ब्याह नहीं करना चाहती | वास्तव में ये दोनों निष्कर्ष सुमन शाह के चरित्र के प्रति अन्याय करनेवाले हैं, क्योंकि सुमन एक ईमानदार, संवेदनशील प्रेमिका है | वह चन्दन से मनोमन प्यार करती है | उसका यह प्यार वासनामय या शारीरिक सम्बन्धों का न होकर आत्मिक मिलन का दिव्य तथा उदात्त प्रेम है | सुमन चन्दन से ब्याह करके उसके जीवन को विषौला नहीं बनाना चाहती | क्योंकि वह जानती है कि चन्दन एक आदर्श वफादार और भावुक प्रेमी है | उसका व्यक्तित्व "राम" जैसा है | और वह यह नहीं चाहती कि उसकी जीवनसाथिनी बनकर उसे कहीं भविष्य में दुख न उठाना पडे | इसलिए वह महसुस करती है कि, पत्नी के रुप में वह असके लिए योग्य नहीं है |

उसका यह कथन उसके चरित्र पर और भी गहरा प्रकाश डालनेवाला है, "तुम बहुत संवेदनशील हो, तुम्हारी साथिन भी .... संवेदनशील होनी चाहिए ....|"[२८] इससे यह स्पष्ट होता है कि, सुमन नारी प्रेम के चरम रुप को दर्शाती है जिसमें सिर्फ समर्पण है | अत: सुमन का चरित्र इस उपन्यास की उपलब्धि मानी जा सकती है |

५] शुभी

क] सरल तथा सीधी

मेघा भटनागर और सुमन शाह से प्रेमभंग हो जाने पर चन्दन मेरठ की शुभी डंग को पत्नी के रुप में अपनाता है | शुभी का परिवार मेरठ में है | दिल्ली में वह लेडी हार्डिंग्ज अस्पताल में नर्स का काम करती

है और तीन सौ रुपये मासिक वेतन उसे मिलता है । उसके भाई भारतीय कम्युनिस्ट पार्टी के नेता सत्यपाल है । एक मित्र के पत्र से चन्दन को शुभी की जानकारी मिलती है । उसकी सादगी से प्रभावित होकर पहली बार देखते ही चन्दन उसे पसंद करता है । चन्दन और शुभी का विवाह बिल्कुल सीदे-सादे ढंग से बाहय आडम्बर के बिना आर्यसमाज पध्दति से मेरठ में संपन्न हुआ । उनके विवाह में दो तीन मित्र, नजीबाबाद से पिताजी और बहन बस इतने ही लोग उपस्थित थे । चन्दन और शुभी का विवाह अपने आप में एक मिसाल है ।

शुभी के रहनसहन में, वेशभूषा में तथा आचार-विचार में सर सादगी तथा सरलता है । "बालों की एक पकी लडी, पुरानी साडी, पैरें पैरों में सादी चप्पल, मेकअप रहित चेहरा - सभी बातें उसके अकृत्रिम व्यक्तित्व की ओर संकेत करती है ।

ख] स्वाव-लंबी

शुभी समझदार, परिश्र मी एवं कष्टों में अविचलित रहनेवाली साहसी और हिम्मतवाली नारी है । पति चन्दन की किसी भी इच्छा अथवा योजना का विरोध नहीं करती है । उसका हृदय उदार है एवं नि:स्वार्थ है । यदि अपने मतलब के लिए वह सिर्फ पति एवं बच्चों की ही चिन्ता करती तो चन्दन को भडकाकर उसे उसके घरवालों से अलग कर सकती थी । लेकिन वह ऐसा नहीं करती और उनके विरुध्द किसी भी प्रकार की शिकायत नहीं करती ।

ग] परिवार के लिए कुर्बानी

शुभी को दो बेटियाँ हुयी । पुत्र-सन्तान नहीं थी । फिर भी तीसरी सन्तान के समय पति की इच्छा के कारण गर्भपात करवा लेती हैं । क्योंकि संयुक्त परिवार के पोषण में किसी प्रकार की आर्थिक असुविधाएँ न हों । वह संयुक्त परिवार के लिए सबसे बडी कुर्बानी करती है । उसके संस्कारों और चन्दन के परिवार के संस्कारों में बहुत बडी मात्रा में फरक है ।

घ] पतिनिष्ठा

पति के सुख को ही सर्वोपरि माननेवाली शुभी मौन रहकर सबकुछ सहती जाती है। माता और बहन को सम्बन्ध तोड लेने का निर्णय चन्दन ही करता है। शुभी इन सन्दर्भ में अपनी कुछ भी प्रतिक्रिया व्यक्त नहीं करती।

संक्षेप में शुभी के चरित्र की विशेषताएँ है, कि वह स्वावलंबी है। सहनशील है। और पतिभक्त तथा उदार भारतीय नारी है। उसमें किसी प्रकार की कृत्रिमता आडम्बर नाज-नखरा दिखाने की प्रवृत्ति नहीं है।

ङ.] आदर्श भारतीय नारी

शुभी एक आदर्श गृहिणी है। आदर्श पत्नी है। ममता या प्यार की तलाश में भटकते हुए चन्दन को जीवन के किसी पडाव में घर की छाया चन्दन को शुभी में ही मिलती है। चन्दन की वह सच्ची सहधर्मिणी है। अपने निस्वार्थ प्रेम के कारण "भ्रमभंग" के पात्रों में अपना एक अलग व्यक्तित्व तथा वैशिष्टय रखाती है।

शुभी के हृदय में एक प्रेममयी पत्नी, एक ममतामयी माँ, एक स्नेहमयी बहन और कर्तव्यपरायण बहुका हृदय निवास करता है।

शुभी धीरे धीरे जलनेवाली वह पावन समीधा है जो स्वयं जलकर अपनी सुगंध से वातावरण को स्निग्ध बना देती है।

६] गौण पात्र

गौण पात्रों में प्रमुख है, मित्रता के कसौटीपर खरे उतरनेवाले रमेश पालीवाल, सुरेन्द्र, जितेन्द्र तथा नरेश। कमानेवाले पुत्र के प्रति निर्दयता की सीमातक अविश्वासी निम्न मध्यवर्गीय चन्दन के माँ-बाप। उत्तरदायित्वहीन आवारागर्दी करनेवाला भाई कुन्दन तथा स्वार्थ में कमीनेपन की सीमातक पहुँची हुई बहन चम्पा।

७] चरित्र-चित्राण की सफलता

"भ्रमभंग" उपन्यास में घटनाओं की अपेक्षा देवेशजी ने अपनी जीवनदृष्टि की अभिव्यक्ति के लिए चरित्र सृजन को अधिक महत्व दिया है। आत्मकथात्मक शैली में प्रस्तुति होने के कारण उपन्यास चरित्र-प्रधान तथा नायक प्रधान है। "भ्रमभंग" का नायक "चन्दन" प्राध्यापक है। उपन्यास-कार देवेशजी भी प्राध्यापक है। अत: चन्दन के चरित्र की समस्त वि विशेषाताओं की अभिव्यक्ति यथार्थ के धरातल पर हो पायी है। आत्मकथानात्मक शैली में "भ्रमभंग" प्रस्तुत होने के कारण उपन्यास में अन्य पात्रों के चरित्रचित्राण के लिए गुँजाइश नहीं है। और लेखक का वह उद्देश्य भी नहीं रहा है।

अत: अन्य सभी पात्र गौण रूप में ही अपना अस्तित्व रखाते हैं। उनका अस्तित्व नायक चन्दन के चरित्र की विशेषाताओं की अभिव्यक्ति में सहायक मात्र है। इसप्रकार प्रमुख पात्र चन्दन के चरित्र की विशेषाताओं का उद्घाटन विविध शैलियों - चेतनाप्रवाह शैली, पूर्व-दीप्ति शैली, डायरी शैली, पत्रात्मक शैली, नाट्य तथा संवाद शैलियों के प्रयोग से सफलता पूर्वक किया है।

८] निष्कर्ष

चन्दन समकालीन उच्चशिक्षित निमध्यवर्गीय युवकों का प्रतिनिधि - त्व करता है। अर्त यह चरित्र वैयक्तिक न होकर प्रतिनिधिक हो गया है। उसकी समस्या भी वैयक्तिक न होकर सार्वजनिक सामाजिक समस्या बन गयी हैं। संयुक्त परिवार की समस्या, शिक्षाक्षेत्र में व्याप्त भ्रष्टाचार, स्त्री-पुरूषा के यौन संबंधों की समस्या, महानगरीय जीवन की कठिनाइयाँ आदि सब प्रश्न मात्र चन्दन के वैयक्तिक प्रश्न नहीं बल्कि वर्तमान के ज्वलंत सामाजिक प्रश्न हैं।

नायक चन्दन महत्वाकांक्षी, संघार्षशील और आशावादी है। व वह परिश्रमी तथा ईमानदार है। वह लघुपुरूषा होते हुए भी "लोहपुरूषा" है। चन्दन के चरित्र में बुध्दिजीवी माने जानेवाले किन्तु बदतर जीवन जीनेवाले प्राध्यापक की नियति का चित्रण सोलह आने खारा है। उसके आत्मकथानों

के माध्यम से देवेशजी ने समाजव्यवस्था की असंगतियों एवं अन्तर्विरोधों को भी प्रहार का लक्ष्य बनाया है |

"भ्रमभंग" में मेघा, सुमन, शुभी, माँ, चम्पा और कुन्दन आदि गौण पात्रों का चरित्र दबा-सा रह जाता है | इसका एकमात्र कारण यह है कि इसकी सम्पूर्ण कथा एक ही दृष्टिकोण .... चन्दन के अवलोकन बिन्दु .. .. से प्रस्तुत की गई है | इसीकारण चम्पा और उसकी माँ के सम्बन्ध में चन्दन के तर्क तो स्पष्ट, किन्तु माँ की ममता, जो उसे चम्पा के साथ रहने को बाध्य करती है, वह ममता अस्पष्ट ही रही रह जाती है |

चन्दन एक विचारशील, संस्कारसंपन्न, आदर्शवादी युवक है | उसका सारा आदर्शवाद यथार्थ की कठोर पगडंडियों से टकराकर चूर चूर हो जाता है, फिर भी उन्होंने मध्यवर्गीय संस्कार के कारण कुछ आदर्शों को स्वीकार किया है | समग्रत: चन्दन के चरित्र से हमें यह बोध मिलता है कि, आत्मनिर्णय का क्षण ही मानव-मुक्ति की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होता है | उसीप्रकार उसका चरित्र आज के नवयुवकों को नयी जीवनदृष्टि प्रदान करने में सफल हुआ है |

आ] <u>कथोपकथन</u>

१. क] <u>कथोपकथन का स्वरूप</u>

उपन्यास की कथावस्तु के विकसित करने में तथा पात्रों के चरित्र-चित्रण में तथा लेखक के उद्देश्य की अभिव्यक्ति में कथोपकथन तत्व सहायक होता है | इसके अतिरिक्त उपन्यासकार अपने इच्छित वातावरण की सृष्टि इस तत्व के सफल प्रयोग से कर सकता है |

ख] <u>कथोपकथन के गुण</u>

१] <u>उपयुक्तता</u> : उपयुक्त कथोपकथन किसी विशेष स्थानपर चमत्कार निर्माण कर सकता है | घटना, अवसर तथा वातावरण के अनुकूल कथोपकथन है |

२] अनुकूलता : पात्रों के स्वभावानुकूल तथा उनके सामाजिक, बौध्दिक और सांस्कृतिक स्तर के अनुकूल कथोपकथान होना चाहिए |

३] सम्बध्दता : कथोपकथान के माध्यम से उपन्यासकार जिन बातों को कहना चाहता है, उनमें कथानक तथा पात्रों से किसी न किसी प्रकारका प्रत्यक्ष पारस्परिक सम्बन्ध हो |

४] स्वाभाविकता : कथोपकथान का प्रयोग स्वाभाविक रूपसे और आवश्यकतानुसार होना चाहिए |

५] संक्षिप्तता : छोटे कथोपकथान अधिक प्रभावात्मक तथा परिस्थितियों का सही बोध करानेवाला हों |

६] उद्देश्यपूर्णता : पात्रों के चरित्र-चित्राण के लिए, या कथानक के विकास के लिए या पात्र की किसी विशेष परिस्थिति में मानसिक प्रतिक्रिया को मनोवैज्ञानिक आधारपर प्रस्तुत करने के लिए कथोपकथान के प्रयोग होने चाहिए | किसी महत्वपूर्ण भावी घटना का संकेत भी कथोपकथान से होता है |

ग] कथोपकथान के अभिनव रूप

"आधुनिक जीवन के जटिल सामाजिक तानेबाने में व्यक्तित्व की सही खोज नये उपन्यासकारों की मुख्य चिन्ता बन गयी है | इसी समस्या के आसपास मनोवैज्ञानिक यथार्थ भी घूमता रहा | संवाद धीरे-धीरे विश्लेषणात्मक तथा स्वगत कथन तक का रूप लेने लगे |"[२९] सामान्यत: स्वगत कथन की योजना मूल रूप से नाटक की वस्तु है, परंतु अब उपन्यास के क्षेत्र में भी इसका प्रयोग हो रहा है | "भ्रमभंग" में कथोपकथान के इन सभी नये रूपों का देवेशजी ने प्रस्तुत किया है |

२] "भ्रमभंग" में कथोपकथान

"भ्रम-भंग" उपन्यास में देवेशजी ने प्रमुख पात्र चन्दन के माध्यम से कथा प्रस्तुत की है | स्थूल घटनाओं के अभाव में लेखक ने चन्दन के मन के चेतना-प्रवाह को ही नाटकीयता प्रदान किया है | चन्दन की पूरी जिन्दगी विभिन्न दृश्यों में खंड-खंड में घटित होती हुयी दिखाई है | घटनाएँ चन्दन

के मस्तिष्क में ही घाटती हैं | इसके अतिरिक्त अनेक स्थानोंपर पात्रों के संवादों के माध्यम से नाटकीय प्रभाव उत्पन्न किया गया है | चन्दन और सुमन के संवाद "भ्रमभंग" में पृ. १०६ से ११८ तक प्रस्तुत हैं | एक उदाहरण -

"शादी के बाद तुम मुझसे क्या चाहोगे?"

"तुम्हारा प्यार और विश्वास |"

"और ....?"

"एक सुन्दरसा बच्चा |"

"व्हाट ....?"[30]

नाट्यशैली की सार्थकता छोटे छोटे एवं सहज स्वाभाविक संवादों के माध्यम से ही संभव है | "भ्रमभंग" में कथोपकथन अर्थात् संवादों का सफल एवं सार्थक प्रयोग हुआ है | ये संवाद मुख्यत: गार्हस्थिक, वैयक्तिक जीवन से संबंधित सामयिक संदर्भो से युक्त तथा तात्त्विक चर्चावाले हैं | "भ्रमभंग" का नायक चन्दन सामयिक परिस्थितियों के विश्लेषण में सम्पूर्ण व्यवस्था के सडांध के प्रति आक्रोश प्रकट करता है | इसकी अभि-व्यक्ति में संवाद विविध रूपों में प्रस्तुत किये गये हैं | इनमें कहीं "एकालाप" का प्रयोग हुआ है | चन्दन अनेकों बार स्वयं से संबोधित होता हुआ चित्रित हुआ है | चन्दन जब भी अपने को अकेला तथा हीन अनुभव करता है तो "प्रति" चन्दन समझाता है, -"बत्ति जला दो, महसूस करो कि तुम हो| तुम इतना सोचते ही क्यों हो चन्दन? सोचने से पीडा होती हैं .... अभी नहाये तक नहीं आज .... चलो ....|"[31]

निराश चंदन का अंतर्मन चंदन को सांत्वना देता है | "तुम निराश क्यों हो जाते हो? क्यों तुम अपने अभावों को इतना बढा चढाकर सोचने लगते हो? "[32] इससे यह स्पष्ट है कि एकालाप संवाद कथ्य के संप्रेषण के हेतु अनिवार्य हैं |

दूसरा रूप है एकपक्षीय टेलिफोनिक संवादों का | "भ्रमभंग" में एक स्थानपर ऐसे संवाद का प्रयोग है | चन्दन रमेश पालीवाल से बात करता है -

"हलो .... पालीवाल ....। .... अरे रमेश । हाँ, मैं हूँ चन्दन ....
आज ही ....। अभी सबेरे पहुँचा हूँ ....। हाँ चाचाजी के यहाँ
हूँ ।"[33]

३] निष्कर्ष

देवेशजी ने "भ्रमभंग" में विविध संवादों का सार्थक उपयोग किया है । पात्र एवं कथानक के अनुरूप भाषा में अभिव्यक्ति होने के कारण संवादों में अद्भूत संप्रेषण शक्ति है । पात्रों की भाषा बौध्दिक है । संवादों की भाषा में स्वच्छंदता है । फलतः संवाद प्रवाही बने हैं । संवादों के माध्यम से चन्दन के चरित्र की विशेषताओं का उद्घाटन करने में देवेशजी को अपूर्व सफलता प्राप्त हुयी है ।

x x x x x x x x x x x x x x x x

x x x x x x x x x x x x x x x x

x x x x x x x x x x x x x x x x

-: सन्दर्भ :-

१. डॉ. बेचन : "आधुनिक हिन्दी उपन्यास उद्भाव और विकास" : पृ. २६

२. प्रेमचंद : "कुछ विचार : पृ. ५५

३. डॉ. त्रिभुवनसिंह : "हिन्दी उपन्यास शिल्प और प्रयोग" : पृ. ३६

४. डॉ. रणवीर रांग्रा : "हिन्दी उपन्यास साहित्य में चरित्र चित्राण का विकास" : पृ. ५३

५. सम्पा. डॉ. नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षाक और कथाकार" : पृ. १८०
[डॉ. सरजू प्रसाद मिश्र : भ्रमभंग का रचना संसार]

६. वही : वही : पृ. १५५
[डॉ. रमेशाकुन्तल मेघ : एक अनायक चरित्र की काथा :"भ्रमभंग"]

७. सम्पा. डॉ. गोपालराय: ""समीक्षा" मई-जून १९७७ " :

८. सम्पा. डॉ. नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षाक और कथाकार" : पृ. १६०
[से. रा. यात्री : "भ्रमभंग" : चेतना पर दस्तक देती कृति]

९. देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" : पृ. १९९

१०. सम्पा. डॉ. नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षाक और कथाकार" : पृ. १५९
[से. रा. यात्री : "भ्रमभंग : चेतना पर दस्तक देती कृति"]

११. देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" : पृ. १८७

१२. वही : वही : पृ. २०३

१३. वही : वही : पृ. ६३

१४. वही : वही : पृ. ६३

१५. वही : वही : पृ. ६३

१६. वही : वही : पृ. १२५

१७. वही : वही : पृ. ५६

१८. वही : वही : पृ. २०४

१९. सम्पा. डॉ. नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षाक और कथाकार" : पृ. १५१
[डॉ. हनुमन्त नायडु : "भ्रमभंग : कथ्य और शिल्प"]

२०. सम्पा. डॉ. नन्दलाल यादव : "देवेश ठाकुर : व्यक्ति, समीक्षक और कथाकार" : पृ. १५१

[डॉ. हनुमन्त नायडु : "भ्रमभंग : कथ्य और शिल्प"]

२१. देवेश ठाकुर : "भ्रमभंग" : पृ. १०३

२२. सम्पा. डॉ. बगम्हदेव मिश्र : "पांडुलिपि" : पृ. ६८

[डॉ. शरेशचन्द्र चुलकीमठ : "संघर्षों के बीच मानवीय आथा का स्वर : भ्रमभंग"]

२३. देवेश ठाकुर : "दे भ्रमभंग" : पृ. १०६

२४. वही : वही : पृ. १०७

२५. वही : वही : पृ. १०७

२६. वही : वही : पृ. ११६

२७. वही : वही : पृ. ११७

२८ वही : वही : पृ. ११७

२९. डॉ. प्रतापनारायण टंडन : "हिन्दी उपन्यास कला" : पृ. २३१

३०. देवेश ठाकुर : "देवेश ठ "भ्रमभंग" : पृ. ११४

३१. वही : वही : पृ. १४४

३२. वही : वही : पृ. ९०

३३. वही : वही : पृ. २३